विचार बिन्दु

कदम पीछे ना हटाने वाला ही ऐश्वर्य को जीतता है। -ऋग्वेद

तमिलनाडु में नए युग की शुरुआत

दिनांक 10 मई, 2026 को थलापति सी. जोसेफ विजय ने तमिलनाडु के मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण कर ली। इस प्रकार लगभग 60 वर्ष से चले आ रहे डीएमके/एडीएमके के शासन का अंत हो गया। 4 मई 2026 को तमिलनाडु विधानसभा के चुनाव परिणाम घोषित हुए। फरवरी, 2024 में बने राजनीतिक दल टीवीके (तमिलगा वेट्री कगज़म) को 108 सीटों पर विजय प्राप्त हुई। विजय स्वयं दो सीटों से जीते हैं। यह उल्लेखनीय है कि तमिलनाडु विधानसभा के सदस्यों की कुल संख्या 234 है। बहुमत के लिए 118 सीटों की आवश्यकता है। चूंकि विजय ने दो स्थानों से विजय प्राप्त की है, अतः विधानसभा की प्रभावी क्षमता 233 रह जाती है। इसके अनुसार, बहुमत के लिए 117 सीटों की आवश्यकता होती है। विजय के दल को 107 सीटें प्राप्त हैं (विजय द्वारा एक सीट छोड़ने पर)। कांग्रेस जिसके पांच विधायक हैं, ने तत्काल ही विजय को समर्थन देने की घोषणा कर दी। चूंकि डीएमके और कांग्रेस का लगभग 20 वर्ष पुराना गठबंधन था, कांग्रेस के इस निर्णय को डीएमके ने विश्वासघात बताया है।

कांग्रेस की सीटें मिलाकर कुल सीटें 112 हुईं। कम्युनिस्ट पार्टी और मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी की दो-दो सीटों को मिलाकर कुल 116 विधायक टी वी के समर्थन में होते हैं।

सबसे बड़ी पार्टी होने के कारण विजय ने सरकार बनाने का दावा राज्यपाल राजेंद्र आवलेकर के समक्ष प्रस्तुत किया। केवल एक सीट की कमी के कारण राज्यपाल ने उन्हें आमंत्रित नहीं किया और 118 विधायकों का लिखित समर्थन सिद्ध करने को कहा। ए एम एम के के एक विधायक का समर्थन पत्र भी राज्यपाल को सौंपा गया था, किंतु इसी दल के अध्यक्ष दिनांकरन ने राज्यपाल से मिलकर यह बताया कि उनके दल के विधायक का समर्थन पत्र फर्जी है। जब टी वी के ने उनके विधायक का समर्थन वाला वीडियो जारी किया तो उसे भी दिनाकरण ने फर्जी बता दिया।

किसी न किसी कारण से 9 मई तक राज्यपाल से बार-बार मिलने के बावजूद, विजय को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने का निमंत्रण नहीं मिला। अंततः जब 9 मई को विजय द्वारा वीसीके के दो और आई यू एम एल के दो विधायकों के समर्थन पत्र भी राज्यपाल को सौंप दिए गए, तब राज्यपाल के पास विजय को मुख्यमंत्री नियुक्त करने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं बचा था।

यह विस्तृत विवरण हालांकि सार्वजनिक रूप से सबको पता है, किंतु यहां पर देना इसलिए आवश्यक है कि पाठक यह समझ सकें कि जब भी किसी राज्य में बीजेपी या बीजेपी समर्थित कोई सरकार नहीं बनती है, तो कैसे भाजपा द्वारा सरकार बनाने के काम में रोड़े अटकाए जाते हैं। कई बार यह काम संविधान एवं सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों के विपरीत जाकर किया जाता है। सरकारिया आयोग की रिर्पोट और एस आर बोम्मई के निर्णय में सर्वोच्च न्यायालय द्वारा यह स्पष्ट किया जा चुका है कि किसी भी राजनीतिक दल को बहुमत प्राप्त है या नहीं, यह जांचने का स्थान राजभवन नहीं अपितु विधानसभा है। ऐसा अनेक बार हुआ, जब राज्यपाल ने चुनाव के पश्चात, सबसे बड़े राजनीतिक दल को सरकार बनाने हेतु आमंत्रित किया, चाहे उसके पास बहुमत की संख्या थी अथवा नहीं। बाद में उन्हें कुछ समय दिया गया, जिस अवधि में उनको विधानसभा में अपना बहुमत सिद्ध करने को कहा गया। इसी सिद्धांत को यदि तमिलनाडु में भी अपनाया जाता तो 5 या 6 मई को ही विजय को मुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई जा सकती थी, किंतु ऐसा नहीं किया गया। जहां तक भाजपा का प्रश्न है, उसका तो केवल एक विधायक बना है। संभव है, भाजपा के शीर्ष नेतृत्व ने यह सोचा होगा कि किसी न किसी कारण से विजय को राज्यपाल के माध्यम से कुछ दिन मुख्यमंत्री बनने से रोका जा सके ताकि भारत सरकार तमिलनाडु में इस आधार पर राष्ट्रपति शासन लागू कर सकें कि वहां किसी दल को बहुमत नहीं है। यह किसी से छिपा हुआ नहीं है कि भारतीय जनता पार्टी के लिए केवल एक ही लक्ष्य रहता है कि वह राज्य अथवा केंद्र सरकार में येन केन प्रकारेण सत्ता में बनी रहे। यदि स्वयं अपने बलबूते पर सत्ता में न आ पाए तो किसी अन्य दल के समर्थन से वह सत्ता में जाए। किंतु मुख्य उद्देश्य किसी अन्य को, विशेषकर कांग्रेस को, सत्ता से दूर रखना होता है। यह रणनीति तमिलनाडु में सफल नहीं हो पाई जिसके कारण टी वी के की सरकार बनने का रास्ता साफ हुआ।

केवल दो साल पहले बनी टी वी के को विजय के नेतृत्व में मिली अभूतपूर्व सफलता के कारणों का विश्लेषण करना उपयुक्त होगा।

तमिल में 'थलापति' का अर्थ जननायक होता है। विजय, तमिलनाडु के सर्वाधिक लोकप्रिय फिल्म स्टार हैं और फिल्मों में काम करने के लिए सर्वाधिक फीस भी उन्हें ही मिलती है। उनके पीछे लोग कितने दीवाने हैं, यह इससे भी पता लगता है कि सितंबर 2025 में जब उनकी एक सभा आयोजित हुई तो उसमें उमड़ी भीड़ में मची भगदड़ से कुछ लोगों की मृत्यु हो गई। विजय के अनुयायियों में युवाओं और महिलाओं की संख्या सर्वाधिक है। जिस प्रकार से विजय की चुनावी रैलियों में भीड़ उमड़ी और उन्हें दीवानेपन की हद तक समर्थन मिला, उससे यह तो स्पष्ट हो रहा था कि कुछ अलग तमिलनाडु में हो सकता है, किंतु यह किसी ने भी नहीं सोचा था कि 2 साल पहले बनी एक फिल्म स्टार की पार्टी टी वी के को 108 सीटों पर विजय प्राप्त होगी और वह सरकार बनाने की स्थिति में होगी।

यदि केंद्र सरकार के एजेंट की तरह और भाजपा के नेताओं के इशारे पर राज्यपाल ने काम नहीं किया होता तो अधिक गरिमा पूर्ण तरीके से, विजय को स्थापित परम्पराओं के अनुसार सरकार बनाने हेतु आमंत्रित कर सकते थे। भाजपा को शायद यह स्वीकार करने में भी कठिनाई हो रही थी कि एक हिंदू बहुल राज्य का मुख्यमंत्री कोई ईसाई धर्मावलंबी बने। यह अलग बात है की विजय को सभी धर्मों और जातियों का समर्थन प्राप्त था और सब ने मिलकर टी वी के को इस चुनाव में, डी एम के और ए आई ए डी एम जैसे पुराने सत्तासीन दलों को पीछे छोड़ते हुए सबसे अधिक सीटों पर जिताया।

> **यदि जनता के द्वारा जताए विश्वास पर जोसेफ विजय खरे उतरते हैं तो शायद इसी प्रकार के नेतृत्व को और इसी प्रकार के नेताओं को देश के अन्य राज्यों में भी उभरने का अवसर मिल सकता है। यह सही है कि देश के लोग पुरानी, पारंपरिक तरह की राजनीतिक से ऊब चुके हैं। वे अब वह जाति, धर्म की राजनीति से ऊपर उठकर केवल विकास और सुशासन की राजनीति को अवसर देना चाहते हैं।**

शपथ ग्रहण समारोह के बाद विजय के द्वारा जो संबोधन दिया गया, उसमें जिस प्रकार का भावपूर्ण दृश्य उपस्थित जन समुदाय में देखा गया, वैसा भारतीय राजनीति में आजकल बहुत कम ही देखा जाता है।

इस संदर्भ में यह उल्लेख करना उचित होगा कि पश्चिम बंगाल में भाजपा द्वारा ऐतिहासिक विजय प्राप्त करने के बाद भाजपा की सरकार बहुत बड़े बहुमत से बनी है। इस राज्य में शुभेंदु अधिकारी द्वारा एक दिन पहले 9 मई 2026 को मुख्यमंत्री पद की शपथ ली गई इस समारोह में प्रधानमंत्री मोदी, गृह मंत्री अमित शाह सहित केंद्रीय मंत्रिमंडल के कई सदस्य और भाजपा शासित 20 राज्यों के मुख्यमंत्री भी उपस्थित थे। तमिलनाडु में विजय के शपथ ग्रहण समारोह की तुलना शुभेंदु के शपथ ग्रहण समारोह से करें तो अंतर स्पष्ट दिखाई दे रहा था। जहां भाजपा के शुभेंदु अधिकारी का शपथ ग्रहण समारोह अत्यंत भव्य और अहंकार पूर्ण था वहीं इसके विपरीत चेन्नई में विजय के शपथ ग्रहण समारोह में भव्यता के स्थान पर सादगी और और अहंकार के स्थान पर नम्रता और अपनापन था। स्वयं विजय के चेहरे पर सरलता और सौम्यता निरंतर स्पष्ट रूप से झलक रही थी। इतनी बड़ी विजय का अहंकार नाम मात्र का भी नहीं था। ऐसा लग रहा था कि विजय ने अपनी सरकार के माध्यम से तमिलनाडु के लोगों के जीवन में कुछ अच्छा करने का संकल्प ले रखा है। उन्होंने शपथ ग्रहण के ठीक बाद एक संबोधन में यह कहा भी कि उनकी सरकार अनावश्यक योजनाओं पर पैसा खर्च नहीं करेगी एवं भ्रष्टाचार को समाप्त करेगी। उनकी प्राथमिकता वास्तविक रूप से धर्मनिरपेक्ष और सामाजिक न्याय आधारित शासन प्रदान करना होगा। उल्लेखनीय है कि विजय ने 2018 में एक तमिल फिल्म 'सरकार' में एक क्रांतिकारी नायक की भूमिका अदा की थी जिसमें वह एक जननायक के रूप में उभरते हैं और स्थापित भ्रष्ट सरकार को उखाड़ फेंकते हैं। कुछ-कुछ, इसी प्रकार का काम विजय ने वास्तविक राजनीति में इस बार करके दिखाया है।

अब यह आशा और अपेक्षा तमिलनाडु के निवासियों को है कि विजय एक स्वच्छ और ईमानदार सरकार लोगों को दें, ताकि राज्य के सभी लोगों को मूलभूत सुविधाएं बिना परेशानी के सुलभ हो सकें।

यदि इस अपेक्षा पर विजय की टी वी के सरकार खरी नहीं उतरी तो फिर उनका भी वही हाल हो सकता है जैसा केजरीवाल का दिल्ली में हुआ। तमिलनाडु के लोग बहुत भावुक हैं, जैसा कि उनके शपथ ग्रहण समारोह में दिखाई दिया। विजय के शपथ ग्रहण समारोह को चेन्नई के विभिन्न स्थानों पर लगाए गए बड़े-बड़े पर्दों पर सीधा दिखाया गया। सभी स्थानों पर इस दृश्य को देखने वाले कई आम लोग फूट-फूट कर रो रहे थे। ये आंसू खुशी और उम्मीद के लग रहे थे। ये लोग किसी के द्वारा लाए नहीं गए थे अपितु स्व- स्फूर्त आए थे।

यह लिखना प्रासंगिक होगा कि तमिलनाडु जैसे राज्य में विजय के लिए सरकार चलाना आसान नहीं होगा, विशेष कर तब, जबकि केंद्र में भाजपा की सरकार है जो विपक्षी दलों की सरकारों के लिए समस्याएं उत्पन्न करने के लिए अब तक अब तक जानी गई है, चाहे वह दिल्ली की केजरीवाल सरकार हो, पश्चिम बंगाल की ममता सरकार सरकार हो या पंजाब की भगवंत मान की सरकार।

विजय के सामने अतिरिक्त चुनौती यह है कि उनके अकेले दल को पूरा बहुमत नहीं है और वह छोटे-छोटे दलों के विधायकों के समर्थन से अपनी सरकार चलाएंगे। सभी दल सत्ता में अपना-अपना हिस्सा मांगेंगे और कहीं कोई कमी आने पर वह समर्थन वापस लेने की धमकी भी लगातार देते रहेंगे।

इन सारी चुनौतियों और जनता की अपार अपेक्षाओं और आशाओं के बीच, किस प्रकार से जोसेफ विजय संतुलन बनाते हुए अपनी सरकार को चला पाते हैं यह देखना बड़ा दिलचस्प होगा। तमिलनाडु में विजय की जीत को भारत की राजनीति में एक नए मोड़ की तरह भी देखा जा सकता है। यदि जनता के द्वारा जताए विश्वास पर जोसेफ विजय खरे उतरते हैं तो शायद इसी प्रकार के नेतृत्व को और इसी प्रकार के नेताओं को देश के अन्य राज्यों में भी उभरने का अवसर मिल सकता है। यह सही है कि देश के लोग पुरानी, पारंपरिक तरह की राजनीतिक से ऊब चुके हैं। वे अब वह जाति, धर्म की राजनीति से ऊपर उठकर केवल विकास और सुशासन की राजनीति को अवसर देना चाहते हैं। तमिलनाडु के लोगों ने सभी पूर्वानुमानों के विपरीत, वर्षों के स्थापित दलों को जिस प्रकार से शिकस्त दी है, वह तमिलनाडु के निवासियों की और वहां के मतदाताओं की राजनीतिक परिपक्वता का परिचायक है।

मतदाताओं ने तो अपना काम पूरा कर दिया है, अब बारी चुने हुए नेताओं की है। उम्मीद है, वे विधानसभा में अपना बहुमत 13 मई तक सिद्ध कर देंगे।

जोसेफ सी विजय को बहुत बधाई और शुभकामनाएं!

-अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अनुठा शहर है जोधपुर

जोधपुर स्थापना दिवस पर विशेष.........

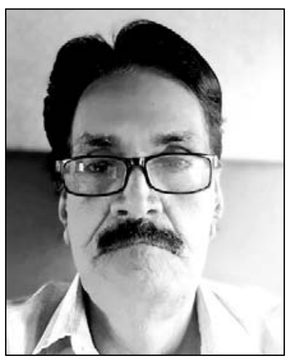

मिश्रीलाल पंवार

जोधपुर अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का अनुठा शहर है। यह अपनी जीवंत संस्कृति के लिए जाना जाता है। इसे राजस्थान की सांस्कृतिक राजधानी भी कहा जाता है। यहां की मीठी बोली तथा संबोधन के साथ 'सा' लगाने की परम्परा की खास पहचान है। इसे ब्लू सिटीऔर सूर्यनगरी नाम से जाना जाता है, मुख्य रूप से अपने भव्य मेहरानगढ़ किले, उमैद भवन पैलेस, और जसवंत थड़ा तथा जोधपुरी कोट के लिए जोधपुर की जगह ही पहचान है। राव जोधा द्वारा स्थापित यह शहर पारंपरिक राजस्थानी भोजन, विशेष रूप से मिर्ची बड़ा, प्याज़ कचौरी और मावा कचौरी के लिए तो मशहूर है ही, यहां के बंद गले के कोट की फैशन की दुनिया मे अलग ही शान है।

मेहरानगढ़ किला : जोधपुर का मेहरानगढ़ किला, राव जोधा द्वारा 12 मई 1459 को बनवाया गया था। मेहरानगढ़ राजस्थान के सबसे ऊंचे (410 फीट) और भव्य किलों में से एक है। यह किला अपनी विशाल दीवारों, ऐतिहासिक महलों और संग्रहालय के लिए प्रसिद्ध है। यह किला शहर के बीच में एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है और यहां से जोधपुर का विहंगम दृश्य दिखाई देता है। किले में सात प्रमुख द्वार हैं, जिनमें जय पोल (महाराजा मान सिंह द्वारा 1806 में निर्मित) और फतेह पोल शामिल हैं। किले के भीतर मोती महल, फूल महल (सोने की नक्काशी), शीश महल, और तखत विलास जैसे सुंदर महल हैं, जो अपनी अनूठी नक्काशी के लिए जाने जाते हैं। यहां एक समृद्ध संग्रहालय है, जिसमें शाही पालकी, तलवारें (अकबर की तलवार सहित), तोपें, और पेंटिंग्स का संग्रह है। मेहरानगढ़ दुर्ग को देखने हर रोज हजारों देशी-विदेशी पर्यटक जोधपुर आते हैं।

शाही महल उमेद भवन पैलेस

जोधपुर का मुख्य शाही महल 'उमेद भवन पैलेस' जोधपुर की शान है। यह महल दुनिया के सबसे बड़े निजी आवासों में से एक है। 1928-1943 के बीच निर्मित यह महल जोधपुर के छितर के पत्थर से बना है। इसलिए इसे छितर पैलेस भी कहा जाता है। अब मह तीन भागों में बंटा है। एक हिस्से मे शाही परिवार का निवास है। एक भाग में शानदार ताज होटल है तथा तीसरे भाग में एक संग्रहालय है। उमेद भवन पैलेस को महाराजा उम्मेद सिंह ने अकाल राहत कार्य के रूप में बनवाया था। इसमें 347 कमरे, एक शानदार गुंबददार लॉबी, और 26 एकड़ में फैले बगीचे हैं। यह महल पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण है, जहाँ संग्रहालय में विंटेज कारें और शाही घड़ियाँ देखी जा सकती हैं।

जसवंत थड़ा: बेहतरीन नक्कासी का नमूना : जसवंत थड़ा मेहरानगढ़ किले के पास स्थित एक शानदार सफेद संगमरमर का स्मारक है, जिसे 'मारवाड़ का ताजमहल' कहा जाता है। 1899 में महाराजा सरदार सिंह द्वारा अपने पिता महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की याद में बनवाया गया यह स्थान बेहतरीन नक्काशी के लिए जाना जाता है।

एतिहासिक मंडोर गार्डन : जोधपुर रेलवे स्टेशन से कोई नौ दस किलोमीटर दूर मंडोर गार्डन है। यह भी प्राचीन पर्यटन स्थल है। मंदिरों और स्मारकों के मनमोहक संग्रह तथा ऊंचे चट्टानी चबूतरे वाले मन्डोर उद्यान एक अन्य प्रमुख आकर्षण हैं। इस उद्यान में जोधपुर राज्य के कई शासकों की छतरियां (स्मारक) स्थित हैं। इनमें महाराजा अजीत सिंह की छतरी प्रमुख है, जिसका निर्माण 1793 में हुआ था। मारवाड़ के शासकों की पहले यह राजधानी हुआ करती थी। यह प्राचीन और ऐतिहासिक स्थल है, जो 6वीं शताब्दी में प्रतिहारों की राजधानी था और बाद में राठौड़ वंश का केंद्र बना। यहां का प्राचीन किला अब खंडहर के रूप में मौजूद है। यह अपनी अनूठी वास्तुकला, विशाल दीवारों और रावण के ससुराल के रूप में प्रसिद्ध है। यहां देवताओं की साल भी दर्शनीय है।

राजस्थान का क्लॉक टावर: घंटाघर : जोधपुर का ऐतिहासिक घंटाघर (क्लॉक टावर), जिसे राजस्थान का क्लॉक टावर भी कहा जाता है, महाराजा सरदार सिंह द्वारा 1880-1911 के बीच निर्मित एक प्रसिद्ध विरासत स्थल है। यह अपने अनोखे पांच-स्तरीय वास्तुकला, पुराने शहर के केंद्र में स्थित होने, जीवंत सरदार मार्केट और ऊपर से मेहरानगढ़ किले के विहंगम दृश्यों के लिए जाना जाता है। घंटाघर के पास का सदर बाजार, यहाँ के पारंपरिक कपड़े (बांधनी), मोजड़ी (जूतियां), और हस्तशिल्प के लिए प्रसिद्ध है। खुद घंटाघर परिसर मारवाड़ की सांस्कृतिक विरासत का जीता जागता नमूना है। जो भी देशी विदेशी पर्यटक जोधपुर आता है,वह एक बार घंटाघर जरूर जाता है। इसके पास ही गुलाब सागर, फतहसागर तथा तूरजी का झालरा स्थित है। आजकल यह क्षेत्र हेरिटेज वॉक के रूप में बहुत लोकप्रिय हो रहा है।

तूरजी का झालरा : जोधपुर का तूरजी का झालरा शहर के सबसे आकर्षक और ऐतिहासिक जल भंडारों में से एक है। यह न केवल पानी के संरक्षण की एक शानदार मिसाल है, बल्कि आजकल फोटोग्राफी और सुकून के पल बिताने के लिए एक प्रमुख पर्यटन स्थल बन गया है। इस झालरे का निर्माण 1740 के दशक में महाराजा अभय सिंह की रानी (तंवर रानी) ने करवाया था। पुरानी परंपरा के अनुसार, राजपरिवार की महिलाएं सार्वजनिक जलाशय बनवाती थीं, उसी के तहत इसका निर्माण हुआ था।स्थापत्य कला का प्रतीक यह झालरा लगभग 200 फीट गहरा है और इसके चारों तरफ सीढ़ियां हैं जो पानी के नीचे जाती हैं। यह लाल बलुआ पत्थर से बना है, जिसमें बहुत ही बारीक और सुंदर नक्काशी की गई है। आजकल यहां विदेशी पर्यटको की भीड़ लगी रहती है।

माचिया सफारी पार्क : जोधपुर का माचिया सफारी पार्क, जिसे माचिया बायोलॉजिकल पार्क के नाम से भी जाना जाता है, कायलाना झील के पास स्थित एक प्रमुख वन्यजीव अभयारण्य है। यह 41 हेक्टेयर में फैला हुआ है और यहाँ शेर, भालू, हिरण, भेड़िया, मरुस्थली लोमड़ी और नीलगाय जैसे कई जानवर प्राकृतिक वातावरण में रहते हैं। आजकल यह स्थल पर्यटकों में लोकप्रिय हो रहा है।

प्राचीन और भव्य मंदिर : जोधपुर अपने प्राचीन और भव्य मंदिरों के लिए भी प्रसिद्ध है, जो शहर के भीतर क्षेत्र से लेकर भौगीशैल परिक्रमा तक फैले हुए हैं। यहाँ के प्रमुख मंदिरों में कुंज बिहारी जी का मन्दिर, चामुंडा माता मंदिर (मेहरानगढ़), अचलनाथ महादेव मंदिर, मसूरिया बाबा रामदेव मंदिर, सिद्धनाथ महादेव मंदिर, मण्डल नाथ महादेव, पाल बालाजी तथा अक्षरधाम मंदिर, बड़ली के भैरुजी का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। ये मंदिर आध्यात्मिक चेतना, ऐतिहासिक कहानियों तथा वास्तुकला का अनूठा मिश्रण हैं।

बंद गले का जोधपुरी कोट : बंद गले का जोधपुरी कोट आज पूरे विश्व में अपनी खास पहचान रखता है। इसके आविष्कार का श्रेय जोधपुर के महाराजा प्रताप सिंह को दिया जाता है। 1887 में इंग्लैंड की यात्रा के दौरान इनके कपड़ों का बक्सा कहीं खो गया था। तब इन्हें वहां पर नए कपड़े सिलवाने पड़ें थे। इसी दौरान जोधपुरी कोट की डिजाइन इन्होने खुद तैयार की। टेलर ने इनके बताए अनुसार बंद गले का कोट तैयार कर दिया। वह कोट पहन कर महाराजा प्रताप सिंह जब समारोह में पहुंचे तो कोट की शान देखकर सभी लोग अभिभूत हो गए। कोट शाही परिवार को बहुत पसंद आया। बाद में लोग बन्द गले का कोट बनवाने उस टेलर की दुकान पर उमड़ पड़े। उन्हीं दिनों से इसको जोधपुरी कोट के नाम से पुकारा जाने लगा। बाद में जोधपुरी कोट भारतीय नेताओं, उद्योगपतियों तथा रईसों की पहली पसंद बन गया। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी, अटल बिहारी वाजपेई से लेकर वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी तक ने अपने लिए जोधपुरी कोट सिलवाया। आजकल तो ब्यांह शादी में लोगों की पहली पसंद बन गया है। जोधपुर के महिपाल भंडारी, सज्जन पुरोहित, ओमशिव पुरी, इरफान खान, सैलेश कुमार जैसे अभिनेताओं ने हिन्दी फिल्म जगत में अदाकारी का प्रदर्शन कर जोधपुर का मान बढाया है।

-मिश्रीलाल पंवार,
लेखक जोधपुर के वरिष्ठ पत्रकार हैं।

प्रदेश के सरकारी स्कूलों में एक माह में 5.5 लाख से अधिक दाखिले

स्कूल शिक्षा में नवाचार का असर - इस बार जुलाई के बजाय एक अप्रैल से शुरू हुआ स्कूलों में दाखिला, प्रवेशोत्सव में नई पहल को मिली सफलता

राजेश यादव

राजनीतिक और प्रशासनिक नेतृत्व के दृढ़ संकल्प से शिक्षण गुणवत्ता में सुधार, अच्छे परीक्षा परिणाम, विद्यालय भवनों का कायाकल्प और बरसों से खाली पड़े पदों पर शिक्षकों की भर्ती से राजस्थान में सरकारी विद्यालयों के प्रति अभिभावकों और विद्यार्थियों का बढ़ता भरोसा अब स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा किए जा रहे सतत प्रयासों और नवाचारों का सकारात्मक परिणाम इस वर्ष प्रवेशोत्सव अभियान में देखने को मिला। इस बार शिक्षा विभाग ने निजी विद्यालयों की तर्ज पर नया शैक्षिणक सत्र 1 अप्रैल से प्रारंभ किया जबकि पूर्व में विद्यालय जुलाई माह से संचालित होते थे। सत्र की इस नई शुरुआत ने न केवल शैक्षिणक गतिविधियों को समय पर गति दी बल्कि नामांकन अभियान को भी बड़ी सफलता दिलाई।

राज्यभर में चलाए गए विशेष नामांकन अभियान के पहले चरण में ही 5.5 लाख से अधिक नए विद्यार्थियों ने राजकीय विद्यालयों में प्रवेश लिया है। यह उपलब्धि दर्शाती है कि सरकारी विद्यालय अब गुणवत्तापूर्ण, आधुनिक और भरोसेमंद शिक्षा के मजबूत केंद्र बनकर उभर रहे हैं।

घर-घर जाकर नामांकन अभियान चलाया-

स्कूल शिक्षा विभाग ने हर बच्चा स्कूल में के उद्देश्य को लेकर व्यापक स्तर पर घर-घर जाकर नामांकन अभियान चलाया। शिक्षकों, शिक्षा अधिकारियों और स्थानीय प्रशासन ने गांवों, कस्बों और शहरी क्षेत्रों में जाकर ऐसे बच्चों की पहचान की, जो स्कूल जाने की आयु के बावजूद विद्यालय से बाहर थे।

अभियान के तहत प्रदेश के सरकारी विद्यालयों में कुल 5,54,088 से अधिक नए विद्यार्थियों का नामांकन दर्ज किया गया। इनमें 2,69,526 बालक और 2,84,530 बालिकाएं शामिल हैं। बालिकाओं की अधिक संख्या इस बात का संकेत है कि प्रदेश में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता और विश्वास लगातार बढ़ रहा है। विभाग ने केवल नए प्रवेश ही नहीं बल्कि शिक्षा से वंचित बच्चों को पुनः विद्यालय से जोड़ने पर भी विशेष ध्यान दिया।

घर-घर सर्वे से तलाशे गए स्कूल से बाहर बच्चे-

इस वर्ष अभियान को अधिक प्रभावी बनाने के लिए शिक्षा विभाग ने बड़े स्तर पर घर-घर सर्वे अभियान संचालित किया। सर्वे का पहला चरण 25 मार्च से शुरू होकर 6, 10 और 15 अप्रैल तक चार चरणों में पूरा किया गया। इस दौरान कुल 3,42,274 ऐसे बच्चों की पहचान की गई, जो किसी कारणवश विद्यालय से बाहर थे। इनमें 14,777 ऐसे विद्यार्थी भी शामिल थे, जिन्होंने तीसरी से नौवीं कक्षा के बीच पढ़ाई छोड़ दी थी। विभाग ने इन बच्चों और उनके अभिभावकों से संपर्क कर उन्हें पुनः शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के प्रयास किए।

दूसरे चरण में और बढ़ने की उम्मीद-

शिक्षा विभाग के अनुसार नामांकन अभियान का दूसरा चरण 4 मई से 4 जुलाई तक संचालित किया जा रहा है। इस चरण में विशेष रूप से ड्रॉपआउट, प्रवासी एवं वंचित वर्ग के बच्चों पर फोकस किया जाएगा। विभाग को उम्मीद है कि दूसरे चरण के बाद नामांकन के आंकड़ों में और अधिक वृद्धि होगी।

विभाग का लक्ष्य स्पष्ट है - प्रदेश का कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे और प्रत्येक बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध हो।

बदलती तस्वीर ने बढ़ाया भरोसा-पिछले कुछ वर्षों में राजस्थान के राजकीय विद्यालयों में हुए व्यापक बदलावों ने विद्यालयों की तस्वीर बदल दी है। अब सरकारी स्कूल केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि आधुनिक सुविधाओं से युक्त प्रेरणादायी शिक्षण संस्थान बनते जा रहे हैं।

विद्यालयों में स्मार्ट क्लासरूम, आईसीटी लैब, डिजिटल लाइब्रेरी, खेल सुविधाएं, बाल अनुकूल वातावरण और गतिविधि आधारित शिक्षण जैसी व्यवस्थाएं विकसित की गई हैं। साथ ही प्रशिक्षित शिक्षकों, नवाचार आधारित शिक्षण पद्धितयों और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इन प्रयासों का सकारात्मक प्रभाव अभिभावकों के बढ़ते विश्वास और विद्यार्थियों के बढ़ते नामांकन के रूप में सामने आ रहा है।

शिक्षा के जरिए सामाजिक बदलाव की दिशा में कदम-

शिक्षा विभाग का यह अभियान केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं है बल्कि इसका उद्देश्य प्रदेश के हर बच्चे को शिक्षा के अधिकार से जोड़ना है। विभाग तकनीक आधारित शिक्षण, बेहतर आधारभूत सुविधाओं और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रहा है। राजकीय विद्यालयों की बदलती तस्वीर यह संदेश दे रही है कि अब सरकारी स्कूल केवल विकल्प नहीं बल्कि बेहतर भविष्य की मजबूत नींव बन चुके हैं।

-राजेश यादव,
सहायक निदेशक, डीआईपीआर

राशिफल मंगलवार 12 मई, 2026

पंडित अनिल शर्मा

प्रथम ज्येष्ठ मास (शुद्ध), कृष्ण पक्ष, दशमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2083, पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 1:17 तक, वैधृति योग रात्रि 11:19 तक, विष्टि करण दिन 2:53 तक, चन्द्रमा आज सायं 7:25 पर मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कुम्भ, मंगल-मीन, बुध-मेष, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज कुमार योग रात्रि 1:17 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 1:17 से सूर्योदय तक है। भद्रा दिन 2:53 तक रहेगी। आज पंचक, वैधृति पूण्यं है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:04 से 10:44 तक, लाभ-अमृत 10:44 से 2:03 तक, शुभ 3:42 से 5:22 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:45, सूर्यास्त 7:01

मेष

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यक्तिगत प्रयासों से आज महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है।

वृष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। पारिवारिक यात्रा संभव है।

मिथुन

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

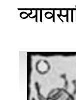

कर्क

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा।

सिंह

परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से सम्पन्न होंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

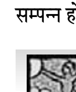

कन्या

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक विवादों का निपटारा हो सकता है।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

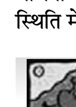

वृश्चिक

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

धनु

मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

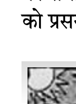

मकर

व्यावसायिक कार्य योजना बनेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।